दिनांक : 26 जनवरी, 2014

गणतंत्र दिवस पर विचार

–अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

भारत आज अपने गण्तंत्र की 65 वीं वर्षगांठ मना रहा है। आज ही के दिन हमें एक उदार संविधान मिला था। संसदीय लोकतंत्र, संघीय ढांचा, ढेर सारे मौलिक अधिकार, एक स्वतंत्र न्याय पालिका द्वारा न्यायिक समीक्षा जैसी मुख्य बातें उसमें शामिल हैं।

मेरा मानना है कि विभिन्न चुनौतियों को देखने और इन चुनौतियों से निपटने के लिए अत्यधिक लचीलापन दिखाकर हम एक मजबूत और ताकतवर लोकतंत्र बने हैं। कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें मैं समझता हूं कि वे भविष्य के लिए एक कार्यक्रम निर्धारित करते हैं। गरीबी भारतीय समाज में सबसे बड़ा अभिशाप बनी हुई है। हमारी आबादी का करीब 30 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं। गरीबों को सम्मान से जीने का अधिकार नहीं है। आतंकवाद और विद्रोही गतिविधियां भारत की संप्रभुता के लिए गंभीर खतरा बनी हुई हैं। बाहरी और भीतरी आतंक का खतरा बना हुआ है। ऐसी स्थिति में हम अपनी चौकसी कम नहीं कर सकते। भारत में राजनीति की गुणवत्ता में सुधार लाने की जरुरत है। राजनीति की ताकत बहुत बड़ी है। राजनीति में जिम्मेदारी उठाने वाले व्यक्ति का कद राजनीतिज्ञों की विशाल शक्तियों के अनुरुप होना चाहिए। राजनीति का गिरता स्तर शासन व्यवस्था में दिखाई देता है। भारत आज ऐसी शासन व्यवस्था की उम्मीद कर रहा है जो समाज को मौजूदा समस्याओं से मुक्त करे। अगर भारत खराब शासन व्यवस्था में औसतन 9 प्रतिशत की विकास दर हासिल कर सकता है तो राजनीति और शासन प्रणाली की गुणवत्ता में सुधार आने पर विकास दर क्या होगी? भारत को मानवीय और दयालु समाज बनाने की जरुरत है। महिलाओं और शोषितों के प्रति हमारी चिंता हमारे व्यवहार में झलकनी चाहिए। महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध और हिंसा हमारे समाज में धब्बा हैं। ये और बहुत सी अन्य चुनौतियां हमारे सामने मौजूद हैं। आइए हम इन चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करें।

*****